

एकलिंगाश्रयिता स्त्री. (तत्.) बन. पादपों की वह अवस्था जिसमें नर और मादा फूल भिन्न भिन्न पादपों पर पाये जाते हैं।

एकलिंगाश्रयी वि. (तत्.) बन. जिसमें अलग-अलग पादपों पर अलग-अलग लिंगों (नर-मादा) के पुष्प उपस्थित हों; जैसे- पपीता dioecious तु. उभयलिंगाश्रयी।

एकलिंगी वि. (तत्.) जीव. जिसमें एक व्यक्ति एक ही लिंग का (नर या मादा) हो, अर्थात् उभय लिंगी न हो।

एकलौता वि. (तद्.) दे. 'इकलौता'।

एकवचन वि. (तत्.) 1. गणनीय संज्ञा शब्दों में एक होने का भाव 2. व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता हो। singular

एकवर्ण वि. (तत्.) 1. एक रंग, एक ही रंग के 2. वर्ण-व्यवस्था में एक वर्ण वाला समाज, समान वर्ण (जाति) वाले, समान रंग वाले, जैसे- सभी गौरवर्ण हैं।

एकवर्षीय वि. (तत्.) 1. जो एक वर्ष का हो चुका हो, एक वर्ष की उम्र का 2. जिसका कार्यकाल एक वर्ष हो, जैसे- एक वर्षीय पौधा, एक वर्षीय योजना, कार्यक्रम, एक वर्षीय पाठ्यक्रम।

एक वस्त्रा वि. (स्त्री.) 1. स्त्री जिसने केवल एक कपड़ा पहना हो 2. रजस्वला स्त्री टि. प्राचीन समय में गरीबी एवं शुचिता की दृष्टि से रजस्वला स्त्रियाँ केवल एक वस्त्र से काम चलाती थी ताकि अन्य वस्त्र अशुद्ध न हों।

एकवाक्यता स्त्री. (तत्.) एक ही वाक्य में बोलने का भाव, समान विचारों वाला होने का भाव।

एकविध वि. (तत्.) 1. एक प्रकार का, एक ही किस्म का 2. एक ही प्रकार से होने या रहने वाला।

एकविवाह पुं. (तत्.) एक समय में एक ही व्यक्ति से विवाहित होने की प्रथा। एक ही पति अथवा एक ही स्त्री होने की स्थिति। monogamy

एकवीर पुं. (तत्.) प्रसिद्ध योद्धा, महावीर, अपने जैसा अकेला वीर।

एकवृत्तीय वि. (तत्.). गणि./ज्या. एक ही वृत्त पर स्थित। एक वृत्त वाला।

एकवेणी वि. (तत्.) अपने केशों की केवल एक चोटी बनाने वाली, उक्त प्रकार से चोटी करने वाली (पति-वियोग आदि में); प्रयो. कृस तनु सीस जटा एक वेणी, जपति हृदय रघुपति गुण श्रेणी- रा.च.मानस, (सुंदर कांड)।

एकशः क्रि.वि. (तत्.) एक-एक करके, एक के बाद एक।

एकशफ वि. (तत्.) जिसका प्रत्येक खुर प्राकृतिक रूप से पूरा (एक) होता है, बीच से फटा नहीं होता जैसे- घोड़ा और गधा एकशफ पशु हैं।

एकशिरीय वि. (तत्.) बन. एक ही मध्यशिरा वाला पत्ता; जैसे- पीपल का पत्ता।

एकशेष पुं. (तत्.) द्वंद्व समास का एक भेद जिसमें दो पदों में से एक ही पद शेष रह जाता है जो दोनों पदों का अर्थ देता है, जैसे- "माता च पिता च" का समस्त पद 'पितरौ' बनने में एकशेष समास है।

एकश्रुत वि. (तत्.) एक ही बार सुना हुआ।

एकश्रुति स्त्री. (तत्.) वेद पाठ का वह प्रकार जिसमें उदात्त, अनुदात्त आदि स्वरों का विचार नहीं किया जाता है।

एक संयोजी वि. (तत्.) रसा. एक संयोजकता वाला (तत्त्व) जो यौगिक बनने पर दूसरे पदार्थ से हाइड्रोजन परमाणु को स्वीकार या विस्थापित करे उदा. क्लोरीन। monovalent, univalent

एकसठ वि. (तद्.) जो गिनती में साठ और एक हो, इकसठ।

एकसत्ताक वि. (तत्.) एक तंत्र, एक व्यक्ति का शासन।

एकसदनवाद वि. (तत्.) विधि. विधायिका के गठन की वह पद्धति जिसमें एक ही सदन